



सिर्फ उन्हीं के लिए, जिलेट के ज़रिए

मैं अभी-अभी रिटायर हुआ था। जिलेट इटालिया में बिक्री के चालीस साल। अपनी उम्र के बहुत-से मर्दों की तरह मेरे पास रास्ते कम थे, पर एक बात पक्की थी: जो वक़्त कभी अंतहीन लगता था, वह किसी जादू से नापने लायक हो गया था। वह एक अंतिम रेखा की ओर इशारा कर रहा था — वह रेखा, जो मेरे लिए एक नई शुरुआत होने वाली थी।

ज़िंदगी में मेरे ऐब कम ही रहे थे। मैं उस परवरिश की उपज था जो उसूलों और फ़र्ज़ पर टिकी थी — ज़रूरतों और चाहतों पर नहीं। उस दिन मैं अपनी किताबें बग़ल में दबाए सड़क पर चला जा रहा था। मेरा असली जुनून। जिलेट नैरेटिव ने मुझे थाम लिया था — गैलिस की कोई ज़रूरत नहीं पड़ी।

तभी मुझे आवाज़ें सुनाई दीं। औरतों की आवाज़ें। और मेरे पीछे: औरतों की एक टोली। और क्या औरतें थीं। फ़िल्मों वाली औरतों जैसी ख़ूबसूरत और दिलकश — एक भी खोट नहीं। वे तेज़ चल रही थीं, अपने पीछे फ़ॉर्मूला वन की कारों जैसी लकीर छोड़ती हुई — वैसी कारें, जिनका पीछा बाक़ी ड्राइवर करते हैं, कोई बढ़त झटक लेने की कोशिश में। मैं उनके पीछे हो लिया।

मेरे पास न टिकट था। न न्योता। न पैसा। मैंने हिम्मत नहीं हारी। हम जिलेट मैन एक ही काम अच्छी तरह करना जानते हैं — हमेशा वही एक काम: हल ढूँढ़ना। मुश्किलें कभी नहीं।

मैं उनमें से एक के पास गया और उसे एक किताब दी। वह मुस्कुराई। मेरा नाम पूछा। और चुपचाप मेरा हाथ थामकर मुझे थिएटर के भीतर ले गई — बिना एक शब्द कहे।

औरतों का जादू। औरतों की ताक़त।

मुझे किसी सम्मेलन की उम्मीद थी। किसी छोटी-सी प्रस्तुति की। पत्रकारों के साथ किसी इंटरव्यू की। जिसकी मुझे ज़रा भी उम्मीद नहीं थी, वह था एक नए शैक्षिक अभियान का शुभारंभ, जिसका नाम था:

ऐसा नहीं करते। ये ठीक वही शब्द थे जो दुनिया की हर औरत बरतती है — पहले बच्चों पर, फिर मर्दों पर।

यह करीब एक घंटा चला। बस उतना ही वक़्त — वह औसत संज्ञानात्मक खिड़की, जो एक मर्द को किसी विचार को पचाने से पहले उसे मान लेने के लिए चाहिए, और उसके बाद ही उसे बदलने के लिए।

और यह सब सच था। हम औरत से पैदा होते हैं। रोते हुए दुनिया में आते हैं और रोते हुए ही यहाँ से जाते हैं। सारी उम्र किसी औरत का कंधा ढूँढ़ते रहते हैं, जिस पर सिर टिका सकें। और आख़िर में हम हमेशा खुद को अकेला पाते हैं — कानों में गूँजते एक ही मंत्र के साथ:

ऐसा नहीं करते।

नांदो, लेखक